विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग -दशम्

विषय-हिन्दी

।।अध्ययन-सामग्री ।।

निर्देश - दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें , समझें और अगर कोई समस्या है तो संबंधित समूह में प्रश्न करें ।

परशुराम :

परशुराम का जन्म प्राचीन काल में कन्नौज के राजा गाधि के सत्यवती नाम की सुन्दर पुत्री थी। राजा ने अपनी पुत्री का विवाह भृगुनन्दन ऋषीक के साथ करवाया। सत्यवती के विवाह में भृगु ऋषि ने अपनी पुत्रवधू एक वरदान दिया। सत्यवती ने अपनी माँ के लिए पुत्र की कामना का आशीर्वाद माँगा। इस पर ऋषि ने उनको दो चरु पात्र दिए और कहा की तुम और तुम्हारी माँ ऋतु स्नान करने के बाद तुम्हारी माँ को पीपल का आलिंगन करना है और तुमको गूलर आलिंगन करना है। उसके बाद दिए हुए चरुओं का अलग अलग सेवन करना है। यह देख सत्यवती ने अपना चारु अणि पुत्री के चारु से बदल लिया और सेवन कर लिया जिसका पता ऋषि को चल गया, उन्होंने सतयवती को बुलाया और बोलै की तुम्हारी माँ ने चल से तुम्हे दिया हुआ चारु खा लिया है। इसके कारणवाश तुम्हारी सन्तान ब्राह्मण होते हुये भी क्षत्रिय जैसा व्यवहार रखेगी और तुम्हारी माता की सन्तान क्षत्रिय होने के बावजूद ब्राह्मण का व्यवहार रखेगी। यह सुनकर सत्यवती ने ऋषि भृगु से विनती करी की कृपया कर मेरे पुत्र का व्यवहार ब्राह्मण जैसा ही रखें, चाहे मेरे पौत्र का आचरण क्षत्रिय जैसा कर दें। यह सुन भृगु ने उन्हें यह वरदान दे दिया| कुछ समय बाद सत्यवती के पुत्र हुआ जिसका नाम जमदग्नि रखा गया। जमदग्नि बहुत तेजस्वी थे। जब वे बड़े हुए उनका विवाह रेणुकादेवी जी से हुआ जो की प्रसेनजित की पुत्री थी। रेणुकादेवी के पाँच पुत्र हुए जिनमे शामिल थे, रुक्मवान, सुखेण, वसु, विश्वानस और परशुराम। परशुराम उनके पांचवे पुत्र थे| परशुराम की प्रतिज्ञा एक बार राजा कार्तवीय सहस्त्रग्नन अपनी सेना के साथ आये परशुराम के पिता की जादुई गाय कामधेनू नामक चोरी करने का प्रयास किया| इस बात को सुनकर उन्हें बहुत गुस्सा आया और यही कारण, उन्होंने उसकी पूरी सेना और राजा कार्तवीरिया को मार दिया। अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए, सहस्त्रग्नन के पुत्र ने परशुराम की अनुपस्थिति में जमदग्नी वध कर दिया| यह जानकार वे और क्रोधित हुए और उन्होंने राजा और उसके के सभी पुत्रों को मार दिया और धरती पर क्षत्रियो का 21 बार विनाश कर दिया| इसके साथ आप

विश्वामित्र

विश्वामित्र गाधि के पुत्र थे। पौराणिक धर्म ग्रंथों और हिन्दू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह माना जाता है कि उन्होंने कई वर्ष तक सफलतापूर्वक राज्य किया था। विश्वामित्र अपने समय के वीर और ख्यातिप्राप्त राजाओं में गिने जाते थे। लम्बे समय तक राज्य करने के बाद वे पृथ्वी की परिक्रमा के लिए निकले। पुरुषार्थ, सच्ची लगन, उद्यम और तप की गरिमा के रूप में महर्षि विश्वामित्र के समान शायद ही कोई हो। इन्होंने अपने पुरुषार्थ से, अपनी तपस्या के बल से क्षत्रियत्व से ब्रह्मत्व प्राप्त किया, राजर्षि से ब्रह्मर्षि बने, देवताओं और ऋषियों के लिये पूज्य बन गये। विश्वामित्र को सप्तर्षियों में अन्यतम स्थान प्राप्त हुआ था। अपनी तपस्या के बल और योग से वे सभी के लिए वन्दनीय भी बन गय थे।

रामचरितमानस

कवि	गोस्वामी तुलसीदास
मूल शीर्षक	रामचरितमानस
मुख्य पात्र	राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण, भरत, शत्रुघ्न
प्रकाशक	गीता प्रेस गोरखपुर
देश	भारत
भाषा	अवधी
शैली	चौपाई और दोहा
विषय	चरित-काव्य
प्रकार	प्रबन्ध काव्य
भाग	कुल सात काण्डों में विभाजित
मुखपृष्ठ रचना	सजिल्द
संबंधित लेख	दोहावली, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका, हनुमान चालीसा

रामचरितमानस (अंग्रेजी:*Ramcharitmanas*) तुलसीदास की सबसे प्रमुख कृति है। इसकी रचना संवत 1631 ई. की रामनवमी को अयोध्या में प्रारम्भ हुई थी किन्तु इसका कुछ अंश काशी (वाराणसी) में भी निर्मित हुआ था, यह इसके किष्किन्धा काण्ड के प्रारम्भ में आने वाले एक सोरठे से निकलती है, उसमें काशी सेवन का उल्लेख है। इसकी समाप्ति संवत 1633 ई. की मार्गशीर्ष, शुक्ल 5, रविवार को हुई थी किन्तु उक्त तिथि गणना से शुद्ध नहीं ठहरती, इसलिए विश्वसनीय नहीं कही जा सकती। यह रचना अवधी बोली में लिखी गयी है। इसके मुख्य छन्द चौपाई और दोहा हैं, बीच-बीच में कुछ अन्य प्रकार के भी छन्दों का प्रयोग

हुआ है। प्राय: 8 या अधिक अर्द्धलियों के बाद दोहा होता है और इन दोहों के साथ कड़वक संख्या दी गयी है। इस प्रकार के समस्त कड़वकों की संख्या 1074 है।

कवि गोस्वामी तुलसीदास

मूल शीर्षक रामचरितमानस

मुख्य पात्र राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण, भरत, शत्रुघ्न

प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर

देश भारत

भाषा अवधी

शैली चौपाई और दोहा

विषय चरित-काव्य

प्रकार प्रबन्ध काव्य

भाग कुल सात काण्डों में विभाजित

मुखपृष्ठ रचना सजिल्द

संबंधित लेख दोहावली, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका, हनुमान चालीसा

रामचरितमानस (अंग्रेज़ी:Ramcharitmanas) तुलसीदास की सबसे प्रमुख कृति है। इसकी रचना संवत 1631 ई. की रामनवमी को अयोध्या में प्रारम्भ हुई थी किन्तु इसका कुछ अंश काशी (वाराणसी) में भी निर्मित हुआ था, यह इसके किष्किन्धा काण्ड के प्रारम्भ में आने वाले एक सोरठे से निकलती है, उसमें काशी सेवन का उल्लेख है। इसकी समाप्ति संवत 1633 ई. की मार्गशीर्ष, शुक्ल 5, रविवार को हुई थी किन्तु उक्त तिथि गणना से शुद्ध नहीं ठहरती, इसलिए विश्वसनीय नहीं कही जा सकती। यह रचना अवधी बोली में लिखी गयी है। इसके मुख्य छन्द चौपाई और दोहा हैं, बीच-बीच में कुछ अन्य प्रकार के भी छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्राय: 8 या अधिक अर्द्धलियों के बाद दोहा होता है और इन दोहों के साथ कड़वक संख्या दी गयी है। इस प्रकार के समस्त कड़वकों की संख्या 1074 है।